Environmental Protection and Social Work Profession

(Proceeding With Full Paper)

Editors

Dr Bijendr Pradhan
Dr Pushpa Mishra
Mr Ankit Sharma
Dr Vikas Sharma

Scanned with CamScanner

यौगिक जीवन शैली, सतत विकास और सामुदायिक स्वास्थ्य

डॉ. विनोद सिहाग

सहायक आचार्य, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

सारांश

किसी राष्ट्र, संस्कृति अथवा धर्म को चिर काल तक स्थायित्व प्रदान करने के लिए उसका निरन्तर विकास होना अति आवष्यक है, इसी क्रम में अनवरत विकास के लिए उनसे जुड़े समुदायो का सभी परिप्रेक्ष्य में स्वस्थ रहना परम शर्त है। समुदाय चूंकि व्यक्तियों से मिलकर बनता है इसलिए अन्तेगत्वा व्यक्ति विशेष का पूर्णतया स्वस्थ होना व किसी न किसी रूप में उत्पादक होना नितान्त आवश्यक है। अर्थात स्वस्थ व्यक्ति यानि स्वस्थ समुदाय तत्पश्चात् सतत विकास यही अपने अस्तित्व को चिरकाल तक बनाये रखने का मार्ग है।

स्वस्थ व्यक्ति की बात करे तो स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए यौगिक जीवन शैली ही एकमात्र उपलब्ध पथ है जिसपर चलकर मानव शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व आध्यात्मिक आयामों में अच्छा महसूस करते हुए अपनी उत्पादकता बनाये रख सकता है।

सतत विकास ही वह प्रक्रिया है जो समाज के विकास में हर क्षेत्र और प्रत्येक स्तर भी भागीदारी सुनिश्चत करती हैं। विकसित देशों के अनुभव उन अवसरों को दर्शाते हैं। जो मंच भारत के लिए "सबका साथ–सबका विकास" (सामूहिक प्रयास–समावेशी विकास) के माननीय प्रधानमंत्री महोदय के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए सार्थक एवं स्थायी राज्य– परोपकार की साझेदारियों का निर्माण कर सकते हैं।

अ. सतत विकास

(i) सतत विकास की अवधारणा

सतत विकास का अर्थ है "वह विकास जो आने वाली पीढ़ियो की क्षमताओं से समझोता किये बिना अपनी जरूरतो को पुरा करना " यही सामाजिक न्याय का सिद्धान्त है।

सतत विकास की अवधारणा ने मूल रूप से पर्यावरण और विकास पर "रिओ दि जिनेरियों में 1992 में हुए सयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का अधार तैयार किया। इस सम्मेलन में हमारे सामान्य भविष्य की चर्चा की गई जिसमें सतत विकास को हमारी पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान माना गया तथा समस्त विश्व को इसके लिए एक मंच पर आने का आह्वान किया गया।

(ii) सतत विकास के उद्देश्य :

स्वस्थ, स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण का प्रकृति प्रदत अधिकार सभी को समान रूप से प्रदान किया गया है इसी आधार पर सतत विकास के चार उद्देश्य निर्धारित किये गये है।

- समाजिक प्रगति और समानता
- पर्यावरण सरक्षण
- प्राकृतिक संसाधनों का सरंक्षण
- स्थिर आर्थिक विकास

(iii) सतत विकास के मार्ग की चुनौती :

हमारे अव्यावहारिक किया–कलापो को और अधिक व्यावहारिक कार्यो में परिवर्तित करने की प्रवृति विकसित करना सतत विकास के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौति है।

(iv) सतत विकास में भारत का लक्ष्य :

भारत के दृष्टिकोण से सतत विकास लक्ष्यों को लक्ष्यों के समुह के रूप में विकास और पर्यावरण को एक साथ लाने की आवश्यकता हैं, क्योकि देश के अधिकांश हिस्से में प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र तनाव और गिरावट के अधीन है, देश के लगभग 10% वन्य जीवों के विलुप्त होने का खतरा है, भूमि का दो–तिहाई हिस्सा प्रदूषण के कारण अपनी उर्वरता खो रहा है, कई शहरो में वायु प्रदूषण खतरनाक स्तर

Scanned with CamScanner